International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor RJIF: 5.74
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2016; Page No. 254-256

तुलसी काव्य की प्रासंगिकता

डॉ. शिवदत्त शर्मा

पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र

भारत ऋृषियों मुनियों और तपस्वियों की भूमि रहा है। इतिहास साक्षी है कि समय समय पर अनेक ऐसे महापुरुष इस धरती पर अवतरित हुए जिन्होंने अपने भागीरथ प्रयास से इस धरती को स्वर्ग बनाने का उपक्रम किया। अनेक मत मतान्तर भी इस भारत में आए और गए प्रायः सभी ने अपना अपना योगदान देकर मानवता को सुन्दर बनाने का उपक्रम किया। अनेक ऐसी रचनाएं जिन्होंने मानवता के लिए आदर्श स्थापित किए, मानवता के विकास की कहानी में मील पत्थर साबित हुईं। इन्हीं रचनाओं में से एक रचना गोस्वामी तुलसी दास की महान कृति श्री रामचरित मानस है। इस दिव्य रचना के उपदेश एवं स्थापित आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

गोस्वामी तुलसी दास अपने समय के प्रतिष्ठित कवि और भक्त हैं। उन्होंने तात्कालिक समाज को बडी समीपता से देखा और परखा था।समाज की अनेक विकृतियों को उन्होंने अनुभव किया था। उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के वे स्वयं द्रष्टा थे। गोस्वामी तुलसी दास का समय विपरीत परिस्थितियों से आवृत्त था। मुस्लिम शासक हिन्दुओं पर किस तरह अत्याचार कर रहे थे, यह किसी से छुपा नहीं है, तथा प्रत्येक इतिहास कार ने इस का सांगोपांग वर्णन किया है तथा रामचरित मानस में भी इसका उल्लेख यथा प्रसंग किया गया है। हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहे थे। मुस्लिम अपने साम्राज्य विस्तार में जनता के दुखदर्द की आवाज नहीं सुन पा रहे थे। समाज में बेरोजगारी तथा आर्थिक विपन्नता छाई हुई थी। जन जीवन पूर्णतः अस्त व्यस्त हो चुका था। ऐंसी अवस्था में सम्पूर्ण समाज मर्यादा विहीन होकर अनैतिक आचरण कर रहा था। शासन प्रायः भ्रष्ट हो चुका था। न्याय की उम्मीद करना रेत से तैल निकालने की तरह व्यर्थ था। लोग सद्कर्म को छोड कर दुष्कर्म कर रहे थे। तुलसी दास का प्रादुर्भाव ऐसी ही विपरीत परिस्थितियों में हुआ।[1]

आज वर्तमान समय में भी असंख्य समस्याएं विद्यमान हैं। सामाजिक, राजनैतिक, सांकृतिक, तथा आर्थिक विषमताओं ने हमारे जीवन को कष्ट मय बना दिया है। सर्वत्र भ्रष्टाचार, बंरोजगारी, भाई भतीजावाद, उग्रवाद, जनशोषण आदि के कारण हमारा जीवन कष्टमय बन गया है। पापाचार और दुराचार बढता जा रहा है। अनेक वैज्ञानिक अविष्कारों के फलस्वरूप लोग सुखसुविधा जुटाने में लगे हुए हैं। मनुष्य चाहे किसी भी माध्यम से धन संग्रह करें, परन्तु समाज में धनवानों का सम्मान हो रहा है। जिसके पास धन है वही पूज्य है तथा वही अग्रगण्य है। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में रामचरित मानस हमारे जीवन में अनुशासन एवं स्मृद्धि ला सकता है। रामचरित मानस में प्रत्येक व्यक्ति के लिए दिशा निर्देश हैं, जो जीवन को स्मृद्ध एवं सुखी बना सकता है। सन्त तुलसी दास के इस महाकावय में सब के लिए कुछ न कुछ सुदेश अवश्य है जिससे हमारा जीवन और मानवता सुखी हो सके।[2]

1. लोकतांत्रिक व्यवस्था का संदेश

सामाज में सबसे बढिया शासन पद्धति लोकतंत्र ही है जिसका संदेश रामचरितमानस में दिया गया हैं। प्राचीन युग में राजतंत्र ही प्रचलित था। राजा का पुत्र ही अगला राजा बनता था। परन्तु उसके बावजूद प्राचीन काल में त्याग की भावना से राजा भी ओतप्रोत था। राज्य प्रशासन पर एकाधिकार होते हुए भी कोई भी राजा प्रजा का हित सर्वोपरि मानता था। श्री रामचन्द्र का जीवन दर्शन हमारे सामने रामायण में दर्ज हैं। दशरथ अपने पुत्र राम को ही परम्परा के अनुसार राजा बनाना चाहते थे परन्तु कैकेयी को दिए वरदान स्वरूप रामचन्द्र को वनवास मिला। दशरथ के ये वचन कि प्राण जाएं पर वचन न जाहिं इसी बात को प्रमाणित करते हैं कि राजा दम्भी नहीं था अपितु अपने वचन का पक्का था तथा उस पर अटल रहता था।[3] राम ने सहर्ष आज्ञा पालन भी किया।

भरत जब चित्रकूट जाकर राम से आयोघ्या लौट कर राजपाट सम्भालने को कहते हैं तो वे पिता की आज्ञा को सर्वोपरि मानते हैं तथा बिना किसी क्षोभ के भरत को यही सलाह देते हैं कि प्रजा का मन, वचन, शरीर से पालन करना चाहिए और राजपाट पाकर राजाको नीति के अनुसार ही राज्य चलाना चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदास ने राजा की तुलना किसान, सूर्य, पर्वत, तथा नदी के साथ की है। ये सभी सबका पालन–पोषण करते हैं, अपना नहीं। जिस प्रकार किसान अपनी खेती की देखभाल करता है, पालन–पोषण करता है, उसी प्रकार राजा को अपनी प्रजा की देखभाल करनी चाहिए।[4]

लंका जीतने के उपरान्त राम ने लंका का राज्य उनके भाई विभीषण को दे दियां। स्वयं आयोध्या लौट कर उन्होने अकेले ही राजपाट नहीं संभाला, बल्कि राम ने पंचायत राज्य की स्थापना की। यही नहीं, उन्होंने सीता, भरत, लक्ष्मण, तथा शत्रुघ्न को वही अधिकार दिया जो अपने पास था। सत्ता का विकेन्द्रीयकरण की इससे बढिया मिसाल कहां प्राप्त हो सकती है। प्रजा की पूर्ण रूप से रक्षा करना एवं उन्हें सुखसुविधाएं प्रदान करना राम ने अपना परम कर्तव्य माना।[5] उत्तर काण्ड में कवि ने जो रामराज्य की कल्पना की है, वह वस्तुतः लोकतंत्र के अत्यधिक समीप है। रामराज्य में सभी लोग अपनेअपने धर्म का पालन करते थे। सभी सुखी थे तथा किसी को भय और शोक नहीं था।[6]

> वर्णाश्रम निज निज धरम, वेद निरत भय लोग।
> चलहि सदा पावहिं सुखहि, नहिं भय शोक न रोग।।

आधुनिक समय में उपरोक्त सभी गुणों का अभाव है। भले ही लोकतंत्र शासन प्रणाली की व्यवस्था विद्यमान है, परन्तु कोई भी राजनेता जन कल्याण की ओर ध्यान नहीं देता। सर्वत्र अन्याय, अत्याचार, दुराचार, आदि दुष्प्रवृत्तियां व्याप्त हैं। प्रजातंत्र के शासकों की सभी नीतियों पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने वालीं हैं। गांव के गरीब किसान तथा मजदूर गरीबी से तंग आकर आत्म हत्या कर रहे हैं। महंगाई,

बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आदि सब समाज को घुण्ण की तरह जर्जर कर रहे हैं। सामान्य व्यक्ति के लिए जीवन यापन ही मुश्किल हो गया है। ऐसी स्थिति में तुलसीदास का काव्य हमारे लिए आदर्श सिद्ध हो सकता है। वर्तमान समय में हमारे नेता तथा प्रशासन नीति–न्याय, सदाचार, परोपकार, सद्वृत्तियों का पालन करें तो निश्चय ही हमारा जीवन अत्यधिक सुखी हो सकता हैं।

2. समन्वयवाद

सन्त तुलसीदास समन्वयवादी सन्त थे। उन्हे अपने परिवेश में अनेक विषमताओं का सामना करना पडा। यह भी कारण हो सकता है कि उनके काव्य में समन्वय का अनूठा संगम दिखाई देता है। उन्होंने अकबर और जहांगीर का राज्य देखा जहां कहने को तो धर्मनिरपेक्षता थी परन्तु अनेक हिन्दुओं को बलात् मुस्लिम बनाने का प्रयास निरन्तर जारी था। हिन्दु धर्म में भी अनेक बुराईयां घर बना चुकीं थीं। उपासना के क्षेत्र में निर्गुण तथा सगुण का मतभेद गहरा हो गया था। धर्म दर्शन तथा आचार व्यवहार में सर्वत्र वैमनस्य फैल चुका था। वैष्णवों एवं शैवों तथा शाक्तों आदि में मतभेद बढता जा रहा था। अनेक मतमतान्तर, विभिन्न मान्यताएं तथा उन्माद समाज को अजगर की तरह अपने में लिपेटे हुए थे। ऐसी अवस्था में आवश्यकता थी एक ऐसे लोक नायक की जो विभिन्न विचार धाराओं में समन्वय पैदा कर पाता तथा परस्पर प्रेम और सौहार्द्र का वातावरण पैदा कर सकता। इस आवश्यकता को गोस्वामी तुलसी दास ने पूरा किया ।[7] उन्होने राम कथा के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, धार्मिक, तथा नैतिक सभी क्षेत्रों में समन्वय की स्थापना की और समाज में व्याप्त रूढियों, आडम्बरों, तथा जड परम्पराओं को उखाडने का सफल प्रयास किया।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार– उनका सारा काव्य समन्वय वाद की विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, ग्राहस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय पाण्डित्य और अपाण्डित्य का समन्वय– रामचरितमानस शुरु से आखिर तक समन्वय का श्रेष्ठ काव्य है।[8]

गोस्वामी तुलसीदास ने प्रत्येक क्षेत्र में समन्वय का उपकम रामचरितमानस में किया हैं। उन्होंने पावनी गंगा कें समान मानस की वाणी के द्वारा हर तरह की विषमता को मिटा कर समन्वय स्थापित करने का सफल प्रयास किया हैं। रामचरित मानस के माध्यम से उन्होने लागों में प्रेम और विश्वास की सरस धारा प्रवाहित की। गोस्वामी तुलसी दास ने सर्वप्रथम शैवों और वैष्णवों का समन्वय किया तथा वैष्णव होते हुएभी राम के मुख से शिव को अपना प्रिय धोषित करवाया–

> संकर प्रिय मम द्रोही, सिव द्रोही मम दास।
> ते न करहिं कलप भरि, घोर नरक महुं वास।।
> इसी तरह द्वैतवाद और अद्वैत वाद का समन्वय भी उनके महाकाव्य में दिखाई देता है।
> भगतिहिं ग्यानहिं नहिं कछुभेदा, उभय हरहिं भव संभव खेदा।।[9]

इस तरह समाज में समरसता को पैदा करने के लिए तुलसी ने महत्व पूर्ण उपकम किया। सम्भवतः सभी क्षेत्रों में समन्वय करके उन्होंनें मानवता के लिए भी बहुत बडा उपकार किया। यह समन्वय स्थापन कोई आसान कार्य नहीं था क्यों कि समाज के अन्दर विघटन की भयंकर स्थिति थी, ऐसी स्थिति में ऐसा कार्य भगीरथ प्रयास ही कहा जाएगा। आज वर्तमान सन्दर्भ में सन्त तुलसी से अधिक और कौन प्रासंगिाक होगा जब चारों ओर असहिष्णुता का वातावरण है। परस्पर धर्माबलम्बी एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे हुए हैं। मानवता प्रश्रय चाह रही है। ऐसे वातावरण में तुलसी का महाकाव्य एवं उसके उपदेश समाज का कल्याण कर सकते हैं।

3. लोक कल्याण की भावना

आज प्रत्येक व्यक्ति धन लोलुप एवं स्वार्थी बन चुका है तथा ईर्ष्या के अजगर ने उसे जकड रखा है। अपने थोडे से स्वार्थ के लिए किसी का कुछ भी अहित करने से नहीं डरता। सर्वत्र चरित्र भ्रष्ट हो चुका है। राजनीतिज्ञ राज नीति के स्तर को भूल कर स्वार्थ साधने में लगे रहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में राजा राम का जो चरित्र उपस्थित किया है, वह आज के राजनेताओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

राम राजा नही लोक सेवक बनकर आयोध्या आए थे। राम का विचार था कि सुशासन के लिए जो भी पग उठाने चाहिएं वे कठोरता से उठाने चाहिएं परन्तु इसमें जनसाधारण का अहित नहीं होना चाहिए। जैसे माली उद्यान के पादपों को पल्लवित और पुष्पित करने में समुचित देखभाल करता है, उसी प्रकार राम ने अपनी प्रजा का पालन किया। रामराज्य में किस प्रकार का वातावरण होता है इसकी एक झलक मानस की इस चौपाई में देखी जा सकती है–

> दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा।
> सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति रीति।।

तुलसी ने दोहावली में अच्छे राजा की तुलना सूर्य और किसान से की है, और दुष्ट राजा की तुलना खजूर के वृक्ष से की है। जिस प्रकार सूर्य समुद्र से जल लेकर पृथ्वी को वर्षा के रूप में लौटा देता है, उसी प्रकार एक सफल राजा जनता से कर लेकर उसी के कल्याण में खर्च कर देता हैं। इसी तरह तुलसी दास राजा को अपना आदर्श प्रजा के सामने रखने की बात भी करते हैं ताकि प्रजा उससे प्रेरणा ले सके। इस दृष्टि से रामचरितमानस आज भी राजनेताओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। रामचरित मानस का उत्तरकाण्ड तो आज के समाज के लिए विशेष रूप से सार्थक कहा जा सकता है।

4. आधुनिकता वाद की भावना–

आज भौतिकता वाद का बोलबाला है। कोई भी अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान नहीं है। प्रायः लोग कर्तव्य मार्ग से भ्रष्ट हो चुके हैं। लागों के व्यवहार और व्यापार में कपट भरा है। उनकी कथनी और करनी में गहरी खाई हैं। धोखा, फरेब, झूठ आदि जीने के हथियार बन चुके हैं। स्वार्थ सर्वोपरि हो गया है । इसके लिए किसी की भी बलि देने में कोई ग्लानि नहीं है। मातापिता की सेवा तो दूर अधिकांश मातापिता अपनी ही सन्तान के दुर्व्यवहार का शिकार हैं। नारी जाति जिसे वन्द्या कहा जाता था सबसे अधिक शोषण की शिकार है। सर्वत्र लूटपाट, और भ्रष्टाचार का ही बोलबाला है। आतंक वाद ने सामान्य जीवन जीना दुभर कर रखा हैं। तुलसी दास ने रामचरित मानस में आदर्श समाज का एक चित्र प्रस्तुत किया है, जिससे प्रेरणा लेकर आज भी सम्पूर्ण विश्व सौहार्द्र पूर्ण वातावरण में रह सकता है। उसके लिए रामराज्य की स्थापना में सभी को योग दान देना होगा।

> सब नर करहिं परस्पर प्रीति,चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति रीति।

आचार्य नरेन्द्रदेव ने भी आदर्श समाज की स्थापना के ही सन्दर्भ में कहा है कि– समाजवाद का ध्येय वर्ग हीन समाज की स्थापना है। यह वर्तमान समाज का इस प्रकार संगठन करता है कि परस्पर विरोधी स्वार्थों– शोषक और शोषित, पीडित और पीडक का अंत हो जाए। इस तरह रामचरित मानस वर्तमान युग की सभी समस्याओं का समाधान है, तथा उसके आदर्श भी उतने ही सार्थक एवं सटीक

हैं। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सभी दृष्टियों से रामचरित मानस आज भी प्रासंगिक है। रामचरित में वर्णित रामराज्य एवं प्रजा के प्रति राजा के कर्तव्य आज भी किसी भी राजनीतिज्ञ के लिए प्रेरणा स्त्रोत हो सकते हैं अगर इस ओर ध्यान दिया जाए। रामचरितमानस में स्थपित मूल्यों में से आधे भी जीवन में उतार लिए जाएं तो यह जीवन स्वर्ग बन जाए, आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी भेदभाव मिटा कर तुलसी द्वारा प्रतिपादित आदर्शों को अपने जीवन और दिनचर्या में उतार लें तो मानवता सजीव हो उठेगी। इस तरह तुलसी दास जी आज भी वर्तमान समय में उतने ही, कदाचित् उससे भी अधिक प्रासंगिक हैं इसमें सन्देह नहीं।

5. सन्दर्भ सूचि–

1. राजापति दीक्षित :तुलसीदास और उनका युग पृ 72
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीः हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ89
3. माताप्रसाद : तुलसी दास पृ 139
4. डॉ तारा नाथ बाली : भक्ति कालीन साहित्य की प्रासेगिकता पृ144
5. श्री रामचरित मानस : उत्तर काण्ड 87
6. उपरोक्त उत्तरकाण्ड 67
7. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी :हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ 143
8. उपरोक्त
9. श्री रामचरित मानस : उत्तरकाण्ड 114–6